



संकर सब्जियों और फूलों से आत्मनिर्भरता

द्वारका¹ और निशा चढ़ार²

खेती यदि नई सोच, सही तकनीक और समय पर मार्गदर्शन के साथ की जाए तो कम जमीन में भी बड़ी आमदनी संभव है। इसका जीवंत उदाहरण मध्य प्रदेश के हटा तहसील के ग्राम समोनिया निवासी श्री आकाश फौजदार हैं, जिन्होंने पारंपरिक खेती से आगे बढ़कर संरक्षित एवं हाईटेक तकनीकों को अपनाया और आज उनका खेत स्वयं एक लाइव मॉडल के रूप में पहचान बना चुका है। किसान श्री आकाश कक्षा 12वीं तक शिक्षित हैं और मध्य प्रदेश के कृषि विज्ञान केंद्र, दमोह से लगातार जुड़कर आधुनिक कृषि तकनीकों का सफलतापूर्वक उपयोग कर रहे हैं। उनके खेत में संकर शिमला मिर्च, टमाटर, लौकी, गेंदा, गुलाब, मटर, चना के साथ-साथ आम, चीकू, पपीता और एप्पल बेर जैसे फलदार पौधे भी लगे हुए हैं। यही कारण है कि उनके फार्म पर वर्षभर किसी न किसी फसल का उत्पादन लगातार बना रहता है।

श्री आकाश फौजदार ने संरक्षित खेती और फसल विविधीकरण से एक एकड़ में तीन लाख रुपये तक की वार्षिक आमदनी अर्जित की है। टपक सिंचाई, मल्टिप्लिंग और वैज्ञानिक तकनीकों के उपयोग से उनका फार्म मॉडल बन चुका है, जो किसानों और युवाओं को आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा दे रहा है।

जल प्रबंधन

जहां पानी की समस्या किसानों के लिए सबसे बड़ी चुनौती होती है, वहीं किसान श्री

आकाश ने इसे अवसर में बदल दिया। उन्होंने एक एकड़ क्षेत्र में खेत तालाब का निर्माण करवाया, जिससे सिंचाई की समस्या दूर हुई। साथ ही, उसी तालाब में मछली पालन कर

सब्जियों के बीच गेंदा उत्पादन

आधुनिक तकनीकों को अपनाने से श्री आकाश को खेती में कई लाभ प्राप्त हुए हैं। सब्जी फसलों के बीच गेंदा की खेती करने से कीट एवं रोगों का प्रकोप कम होता है, जिससे कीटनाशकों पर होने वाला खर्च घटता है और कुल आमदनी में वृद्धि होती है। गेंदा फूल की जीवन क्षमता 7 से 10 दिन तक होती है, जिससे किसानों को विपणन में भी सुविधा मिलती है।

अतिरिक्त आय का स्रोत भी विकसित किया गया है।

शिमला मिर्च और टमाटर से आय वृद्धि

श्री आकाश फौजदार द्वारा हाइब्रिड शिमला मिर्च की खेती में प्रति एकड़ लगभग डेढ़ से दो लाख रुपये की लागत पर 3.25 लाख रुपये तक की आय प्राप्त की जा रही है। इसी प्रकार हाइब्रिड टमाटर की खेती से भी लगभग इतनी ही आमदनी संभव हुई है। वहीं लौकी की खेती में 50 हजार से एक लाख रुपये की लागत पर 2 से 3 लाख रुपये तक की आय अर्जित की जा रही है।



तालाब किनारे एप्पल बेर

केवीके, दमोह की भूमिका

श्री आकाश फौजदार का कृषि विज्ञान केंद्र, दमोह से जुड़ाव आधुनिक खेती की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ। वैज्ञानिक उन्नत तकनीकों को अपनाकर खेती को तकनीकी रूप से सुदृढ़ और आर्थिक रूप से लाभकारी बनाया गया। नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहभागिता से नवाचार आधारित कृषि मॉडल विकसित हुआ है।



मछली पालन हेतु स्वच्छ तालाब

अन्य किसानों के लिए प्रेरणा

श्री आकाश फौजदार द्वारा अपनाया गया यह मॉडल आसपास के किसानों के लिए प्रेरणा स्रोत बन रहा है। बाजार की मांग के अनुरूप फसल चयन और वैज्ञानिक तकनीकों के प्रयोग से कम भूमि में भी बेहतर मूल्य और अधिक आय प्राप्त की जा सकती है।

¹अतिथि शिक्षक, कीटशास्त्र विभाग, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, कृषि महाविद्यालय, पन्ना, मध्य प्रदेश- 488001, ²एम.एससी.(बॉटनी), महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, शासकीय स्नातकोत्तर उत्कृष्ट महाविद्यालय, टीकमगढ़, मध्य प्रदेश-472001